"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

गुरू वन्दना

जै जै जै गुरूदेव नमामि, पूरण ब्रह्म सनातन स्वामी।
जै जै जै गुरूदेव नमामि, पूरण ब्रह्म सनातन स्वामी।।

1. राधा बल्लभ हृदय बसाए, श्री हरिवंश सदा मन भाए।
श्री हरिवंश के आप दुलारे, श्री चरणन के रहे सहारे।।
का मुख महिमा जाए बखानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

2. धन धन मात–पिता जिन जावे, ले अवतार भक्त हित आयें।
कोई कोई जाने भक्त या ज्ञानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

3. अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, वेद शास्त्र के हो तुम ज्ञाता।
मन क्रम वचन प्रिय अति बानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

4. विश्व विजयी झंडा फहराये, राधे राधे नाम रटाये।
घट घट की जानी अन्तर्यामी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

5. ऋषियों में शिरोमणि कहाये, देवों में गुरूदेव बताये।
लीला धारी को नहिं जानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

6. सनक सनन्दन भेष तिहारों, कोई कोई जाने जानन हारो।
नारद सारद के मन मानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

7. चारों दिस है नाम तिहारो, सूरदास गुरू तिलपत वारे।
गुरू विन सूनी है राजधानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

8. सदा अमर है जोत तिहारी, युग युग की है लीला न्यारी।
सत्य सनातन गुरू जी की बानी, जै जै जै गुरूदेव नमामि.....

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

"श्री राधे जी की आरती"

शृङ्गार आरती के पद

बनी श्रीराधा मोहन की जोरी ।
इन्द्र नील मणि श्याम मनोहर सात कुम्भ तन गोरी ।।
भाल विशाल तिलक हरि कामिनि चिकुर चंद्र बिच रोरी
गजनायक प्रभ चाल गयन्दनि गति वृषभानु किशोरी ।।
नील निचोल युवति मोहन पट पीत अरुण सिर खोरी ।
जय श्रीहितहरिवंश रसिक राधापति सुरत रंग में बोरी ।१४

बेसर कौन की अति नीकी ।
होड़ परी लालन अरु ललना चौंप बढ़ी अति जीकी ।।
न्याय परयौ ललिताजू के आगे कौन ललित कौन फीकी ।
दामोदर हित विलग न मानौं झुकन झुकी श्रीराधे जू की

स्तुति-श्रीयुगल ध्यान-दोहा

श्री प्रिया बदन छबि चन्द्र मनों, प्रीतम नैन चकोर ।
प्रेम सुधा रस माधुरी, पान करत निसि भोर ।।१।।
अंगन की छवि कहा कहौं, मन में रहत विचार ।
भूषन भये भूषननको, अति स्वरूप सुकुमार ।।२।।
सुरंग मांग मोतिन सहित, शीश फूल सुख मूल ।
मोर चन्द्रिका मोहिनी, देखत भूली भूल ।।३।।
श्याम लाल बेंदी बनी, शोभा बढ़ी अपार ।
प्रकट विराजत शशिन पर, मनौं अनुराग सिंगार ।।४।।
कुण्डल कल ताटंक चल, रहे अधिक झलकाइ ।
मनौ छबि के शशि भानु जुग, छवि कमलनि मिलि आइ।।५।।
नासा वेसर नथ बनी, सोहत चंचल नैन ।
देखत भांति सुहावनी, मोहे कोटिक मैन ।।६।।
सुन्दर चिबुक कपोल मृदु, अधर छुरंग सुदेश ।
मुसिकन बरसत फूल सुख, कहि न सकत छवि लेश ।।७।।
अंगनि भूषन झलकि रहे, अरु अंजन रंग पान ।
नव सत सरवर ते मनौ, निकसे करि स्नान ।।८।।
कहि न सकत अङ्गन प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ ।
मानौ बागे रूप के, पहिरे दुहुँनि बनाइ ।।९।।
रतनांगद पहुँची बनी, बलया बलय सुढार ।
अंगुरिन मुंदरी फबि रही, अरु मेंहदी रंग सार ।।१०।।
चन्द्र हार मुक्तावली राजत दुलरी पोत ।
पान पदिक उर जगमगे प्रतिविम्बित अंग जोति ।।११।।
मनि मय किंकिनि जाल छबि, कहौं जोई सोई थोर ।
मनों रूप दीपावली जग मगात चहुँ ओर ।।१२।।
जेहरि सुमिलि अनूप बनी नूपुर अनबट चार ।
और छांड़िकै या छबिहि हिय के नैन निहार ।।१३।।
बिछुबनि की छवि कहा कहौं, उपजत रव रुचि दैन ।
मनौ साबक कलहंस के बोलत अति मृदु बैन ।।१४।।
नख पल्लव सुठि सोहने, शोभा बढ़ी सुभाइ ।
मानौ छबि चन्द्रावली, कञ्ज दलन लगी आइ ।।१५।।
गौर बरन सांवल चरण, रचि मेहदी के रंग ।
तिन तरुबनि तर लुठत रहैं, रति जुत कोटि अनंग ।।१६।।
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार ।
इकछत प्रेम छके रहैं, अद्भुत प्रेम विहार ।।१७।।
अनुपम श्यामल गौर छबि, सदा बसहु मम चित्त ।
जैसे घन अरु दामिनि, एक संग रहैं नित्त ।।१८।।
बरनें दोहा अष्टदस, युगल ध्यान रसखान ।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छबि उर में आन ।।१९।।
पलकनि कें जैसे अधिक, पुतरिन सों सति प्यार ।
ऐसे लाड़िली लाल के, छिन छिन चरण सँभार ।।२०।।

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

अथ श्री संध्या आरती के पद

आरति कीजै श्यामसुन्दर की, नन्द के नंदन राधिकावर की ।
भक्तिकर दीप प्रेम कर बाती, साधु संगतिकर अनुदिन राती ।
आरति ब्रजयुवति यूथ मनभावै, श्यामलीला श्रीहरिवंशहित गावैं
आरति राधावल्लभलालकी कीजै, निरखि नयन छवि लाहौलीजै
सखि चहुँओर चँवर कर लीये, अनुरागन सौं भीने हीय ।
सनमुख बीन मृदंग बजावैं, सहचरि नाना राग सुनावैं ।
कंचनथार जटित मणि सोहै, मध्य वर्तिका त्रिभुवन मोहै ।
घंटा नाद कह्यो नहिं जाई, आनन्द मंगल की निधि माई ।
जयति२ यहजोरी सुखरासी, जयश्रीरूपलालहित चरन निवासी
आरति राधावल्लभलालकी कीजै, निरखि नयन छवि लाहौलीजै

"श्री राधा बल्लभ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

"संध्या आरती श्री युगल किशोरी जी की"

चन्द्र मिटे दिनकर मिटे-मिटे त्रिगुण बिस्तार,
दृढ़ वृत श्री हरीवंश कौ मिटे न नित्य विहार,
जोड़ी युगल किशोर की ओर रची विधि बाद,
दृढ़ वृत श्री हरीवंश कौ निमियौ आदि युगाद,
निगम ब्रह्म परसत नहीं जो रस सबसे दूर,
कियौ प्रगट हरीवंश जू रसिकन जीवन मूर,
रूप बेल प्यारी बनी सो प्रीतम प्रेम तमाल,
दो मन मिल एकऊ भयै श्री राधा बल्लभ लाल,
निकश कुञ्ज ठाड़े भयै भुजा परस पर अंश,
श्री राध बल्लभ मुख कमल निरख नैन हरीवंश,
रे मन श्री हरीवंश भज जो चाहत विश्राम,
जेही रस बस बृज सुन्दरिन छांड़ दिये सुख धाम
निगम नीर मिल एक भयौ भजन दुगध समसेद,
श्री हरीवंश हंस - न्यारौ कियौ प्रगट जगत के हेत,
श्री राधा बल्लभ लाडली अती उदार सुकुमार,
ध्रुव तौ भूल्यौं और सू तुम जिने देऊ बिसार,
तुम जिने देऊ बिसार ठौर मौकू कछु नाहीं,
प्रिय रंग भरी कटाक्ष नेक चित्तियों मोह माही,
बढ़े प्रीत की रीत बीच कछु होय न व्याधा,
तुम हो परम प्रवीण प्राण बल्लभ श्री राधा,

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

बिसरियों न बिसारियों यही दान मोह देय,
श्री हरीवंश के लाडले मोह अपनों कर लेय,
कैसोऊ पापी क्यों न हो श्री हरीवंश नाम जो लेय,
अलख लढेती रीझ कै महल लखवासी देय,
महिमा तेरी कहा कहूँ श्री हरीवंश दयाल,
तेरे द्वारे बसत हैं सहज लाड़ली लाल,
सब अधमन कौ भूप हो नाही न कछु समझन्त,
अधम उधारण ब्यास सुत यह सुनके, हरीसन्द,
बन्दऊ श्री हरीवंश के चरण कमल सुख धाम,
जिनकौ बन्धन नित्य ही छेल छबिलों श्याम,
श्री हरीवंश स्वरूप कौ मन बच करेहूँ प्रणाम,
सदां-सदां तन पाइयौ श्री वृन्दावन धाम,
जोड़ी श्री हरीवंश की श्री हरीवंश स्वरूप,
सेवक बाणी कुञ्ज में बिहरट परम अनुपम,
करुणा निधि और कृपा निधी श्री हरीवंश उदार,
वृन्दावन रस कहन कौ प्रगट धरयौ अवतार,
हितकी यहाँ उपासना हित के हैं हम दास,
हित विशेष राखत रहो नित चित हित की आश,
हरीवंशी हरी अधर चढ़ी गूंजत सदा अनन्त,
दृग चकोर प्यासे सदा पाय सदा मकरन्द,
हरीवंश ही मन गाइये भावें भाव हरीवंश,
हरीवंश बिनान निकासियों पद निवास श्री हरीवंश

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

'आरती लाडली लाल की'

दीजौ श्री वृन्दावन बास –
निरखू राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
यह जोड़ी मेरे जीवन प्राण–
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
हे जी – मोर मुकट पीताम्बर हाजी पीताम्बर उर वैज्यन्ती माल –
हाँ जी गल फूलन के हार,
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
हे जी यमुना पुलिन बंसीवट – हांजी बंसीबट –
सेवा कुञ्ज निजधाम – हाँ जी मण्डल सेवा सुखधाम,
हाँ जी मानसरोवर निज बाद ग्राम,
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
हे जी बंसी बजावे प्यारो मोहना – हां जी प्यारौ सोहना –
ले ले राधा – राधा – नाम – हाँ जी ले ले श्री प्यारी – प्यारी नाम –
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
हे जी – देखौ या बृज की रचना श्री वृन्दावन की रचना –
नाचें – नाचें जुगल किशोर,
हां जी – नाचें नवल किशोर–
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,
हे जी चन्द्रसखी को प्यारौ – श्री राधा जू कौ प्यारौ गोपिन कौ प्यारौ –
विरज रख वारौ –
श्री हरीवंश दुलारौ – दर्शन दीजौ दीना नाथ – हाँ जी दर्शन दीजौ हित लाल,
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े
यह जोड़ी मेरे जीवन प्राण
निरखू श्री राधा बल्लभ लाल कूँ लड़े ती लाल कूँ लड़े,।

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

आरती श्री राधा कृष्ण की

भजे जा मन राधे कृष्णा - राधे कृष्णा - राधे गोविन्द

1. केशव जी कल्याण गिरवर धरण छबीलो लाल !
   मदन मोहन श्री वृन्दावन चन्द - भजे जा मन —

2. देवकी कौ छैया बलदाऊ जी कौ भैया लाल
   जाकौ मुख देखे ते कटत सब फन्द - भजे जा मन —

3. चत्र भुजी छत्र पाल देवकी नंदन देव
   नन्द कौ नंदन प्यारौ असुरण कन्द - भजे जा मन —

4. बृज पती बृज राज सूरण के सारे काज
   मुरलीधरे ते नैयना देखते आनन्द - भजे जा मन —

5. गोपी बल्लभ गोपी नाथ गोपियन के सारे काज
   गऊअन के चराये ते कहाये गोपल
   राधे - राधे गिरवर के उठाये ते कहाये गोविन्द - भजे जा मन —

6. यादों पती यादों राय भगतन सदां सहाय ।
   ये ही गुण गाये श्री परमानन्द - भजे जा मन —
   श्याम सुन्दर मदन मोहन श्री वृन्दावन चन्द - भजे जा मन —

"श्री राधा बल्ल्भ जयति, श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति"

"जयकारे"

बोलिये श्री राधा बल्लभ लाल की जय,
श्री हित जी महाराज की जय,
श्री हरिवंश जी महाराज की जय,
श्री तरुवर चन्द जी महाराज की जय,
श्री सेवक जी महाराज की जय,
श्री गुरुजी महाराज की जय,
सब संत भक्तों की जय,
जय जय श्री राधे श्याम !